INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF HUMANITIES AND INTERDISCIPLINARY STUDIES
(Peer-reviewed, Refereed, Indexed & Open Access Journal)
DOI : 03.2021-11278686 ISSN : 2582-8568 IMPACT FACTOR : 5.828 (SJIF 2022)

मैथिलीशरण गुप्त के काव्यों में नारी भावना

(Female Sentiment in the Poems of Maithilisharan Gupta)

प्रा. डा. पटेल शर्मिला सुमंतराय

हिंदी विभागाध्यक्ष एवं कार्यकारी आचार्य,
श्री रंग नवचेतन महिला आर्ट्स कालेज, वालीया,
ता. वालीया, जि. भरूच (गुजरात)

DOI No. 03.2021-11278686 DOI Link :: https://doi-ds.org/doilink/11.2022-28272933/IRJHIS2211010

प्रस्तावना :

मैथिलीशरण गुप्त का साहित्य मंच पर आविर्भाव उस समय हुआ जब भारत के कवि पाश्चात्य साहित्य और विचारों से प्रभावित होकर नारी को जीवन के विस्तृत क्षेत्र में सहधर्मिणी, माता, भगिनी एवं पुत्री के रुप में देखने लगे थे। स्वतंत्रता और समानाधिकार की भावना और स्वातंत्र्य संग्राम में भारतीय नारी के सहयोग के फलस्वरुप भी उसका सांस्कृतिक सामाजिक और राजनीतिक महत्व स्वीकार किया जा रहा था। गुप्तजी कालिदास की तरह नारी को पुरुष की सखी और सचिव तथा जयशंकर प्रसाद की सद्वश 'नारी तुम केवल श्रद्धा हो', मानते थे। वे पारिवारिक जीवन के कथाकार है, और परिवार का अस्तित्व नारी के बिना संभव ही नहीं है। अतः वह नारी को जीवन का महत्वपूर्ण अंग मानते है। नारी के प्रति उनकी दृष्टि मर्यादावादी और सांस्कृतिक रही है। वह शरीरी संसर्ग के स्वस्थ रुप को स्वीकार करते है यथावसार उन्हों ने नारी के कामिनी और रमणी रुप के मनोरम चित्र भी उकेरे है। 'पंचवटी' में शूर्पणखा का रुप–चित्रण, 'साकेत' में उर्मिला की यौवन सुलभ उत्सुकता, विकलता, चंचलता, और 'हिडिम्बा' में भीम से सहवास की याचना इसके उदाहरण है, पर कुल – मिलाकर वह अपने नारी – पात्रो में उन्हीं गुणों की प्रतिष्ठा करते है जो भारतीय कुलवधू के आदर्श माने गये है, साथ ही उन्होंने नारी को पुरुष का पूरक अंग मानते हुए उसके स्वतंत्र व्यक्तित्व, स्वाभिमान, दर्प, स्वावलंबन, आदि का भी वर्णन किया है और उसके अधिकारों तथा प्रतिष्ठा का जोरदार समर्थन किया है।

गुप्तजी नारी को भोग्या मात्र तो मानते ही नहीं, उन्हें नारी–संबंधी अनुदार दृष्टि भी असहय है। 'द्वापर' की विधृता पुरुषों की इस संकीर्ण दृष्टि की भर्त्सना करती है;

''नर के बाँटे क्या नारी की नग्न मूर्ति ही आई
माँ, बेटी या बहिन हाय, क्या संग नहीं वह लाई। ''1

विधृता के माध्यम से कवि ने नारी की सामाजिक हीनता और अरक्षित पत्नित्व पर प्रश्न–चिह्न लगाया है, उनकी यशोधरा भी नहीं मानती कि नारी सिध्धि मार्ग की बाधा है। गुप्तजी की यशोधरा में नारी का विश्व कल्याणी रुप है। नारी पुरुष के मार्ग का विध्न नहीं है वरन् वह उसकी साधना की पुजारिन है। वह पति को क्षात्रधर्म पालन हेतु रणाङगण में प्रस्तुत कर सकती है ––

''स्वयं सुसज्जित करके क्षण में,
प्रियतम को प्राणों के प्रण में
हमी भेज देती है रण में क्षात्र–धर्म के नाते।''2

अर्ध विश्व में व्याप्त नारी की उपेक्षा नहीं हो सकती। यह सच है कि अधिकांश स्थलों पर गुप्तजी ने नारी की निरीहता के प्रति करुणा उत्पन्न की है –

''अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी
आंचल में है दूध और ऑखो में पानी।''3

पर अनेक पात्रों द्वारा उन्होंने नारी की सामाजिक परतंत्रता के प्रति आक्रोश भी व्यक्त किया है। यथा अवसर नारी राष्ट्र और समाज की सेविका और वीरांगना के रुप में शोभित हुई है और राक्षस स्त्रियों तक ने कवि की उदारता पायी है। हिडिम्बा राक्षसी न रहकर वैष्णवी बन गयी है। रावण कुल की स्त्रियाँ मंदोदरी, सुलोचना, आदि को सती रुप में चित्रित किया गया है।

गुप्तजी के अधिकांश काव्यो में नारी के तीन रुप प्रमुख है – प्रेमिका, पत्नि और माता। इन तीनो रुपो में एक ओर वह अपना कर्तव्य पालन कर हमारी श्रद्धा जगाती है तो दूसरी ओर प्रिय वियोग, आहत, वात्सल्य, पति की संदेह शीलता, पर–पुरुष के प्रेम–प्रस्ताव से आतंकित नारी हमारे हृदय को करुणाद्रवित भी करती है। प्रतिकूल परिस्थितियों में नारी –पात्रो – द्रौपदी, शची, विधृता, रानकदे आदि को सतीत्व की अग्नि परीक्षा में डालकर तथा उन्हें उस ताप से द्वादशवर्णी स्वर्ण की तरह खरा और निखरता दिखाकर उन्हों ने नारी का तपोनिष्ठ और उदात्त चरित्र अंकित किया है। वियोगिनी रुप में उर्मिला, यशोधरा, और विष्णुप्रिया का जीवन और आचरण पाठकों को श्रद्धावनत और विस्मयविमुग्ध कर देता है। उर्मिला यदि अवधि शीला का गुरुभार लिए उसे अपनी अश्रुधार से तिल तिल काटती है तो यशोधरा जिसकी 'आँखो में पानी कभी नहीं सूखता' राहुल के प्रति कर्तव्य भार को वहन करते हुए 'जल जल कर काया' को जीवित रखती है। एक पीड़ा का स्वागत करती है – 'वेदना तू भी भली बनी' दूसरी मृत्यु का 'मरण सुंदर बन आया री'। विष्णुप्रिया तो आरंभ से अंत तक प्रेम की जीवनव्यापी साधना करती है। उसका करुण विप्रलंभ तीनों पात्रो में सर्वाधिक मर्मस्पर्शी है।''4

'भारत भारती में प्राचीन भारत की झलक देते हुए भारत भूमि की आदर्श नारियों के स्मरण को गुप्तजी ने इस प्रकार से संबोधित किया है :–

केवल पुरुष ही थे न वे जिसका जगत् को गर्व था,
गृहदेवियां भी थी हमारी देवियां ही सर्वथा।
था अत्रि अनुसूया सद्वश गार्हस्थ्य दुर्लभ स्वर्ग में,

दांपत्य में वह सौख्य था जो सौख्य था अपवर्ग में।।
निज स्वामियों के कार्य में समभाग जो लेती न वे,
अनुरागपूर्वक योग जो उसमें सदा देती न वे,
तो फिर कहाती किस तरह अद्धाँगिनी सुकुमारियां
तात्पर्य यह अनुरुप ही थी भवरों की नारियां।''5

विदुला सुमित्रा, कुन्ती, सावित्री, सुकन्या, अंशुमती, गांधारी, दमयन्ती आदि पर विस्तृत फूटनोट देकर इस प्रसंग में वे फिर कहते है ––

''अबला जनों का आत्मबल संसार में वह था नया,
चाहा उन्हों ने तो अधिक क्या, रवि उदय भी रुक गया
जिस क्षुब्ध मुनि की दृष्टि से जल कर विहग भू पर गिरा
वह भी सती के तेज सम्मुख रह गया निष्प्रभ निरा।'' 6

आगे चलकर वे पुनः कहते है ––

''है प्रीति और पवित्रता की मूर्ति सी वे नारियां
है गेह में वे शक्ति–रुपा देह में सुकुमारियां
गृहिणी तथा मंत्री स्वपति की शिक्षिता है वे सती
ऐसा नहीं है वे कि जैसी आजकाल की श्रीमती ।'' 7

फिर आधुनिक काल की स्त्रियों की दुर्दशा पर वे उसी 'भारत–भारती'में वर्तमान खंड में लिखते है–

''पाले हुए पशु–पक्षियों का ध्यान तो रखते सभी
पर नारियों की दुर्दशा क्या देखते है हम कभी ?
हमने स्वयं पशु–वृत्ति का साधन बना ड़ाला उन्हें,
सन्तान जनने मात्र को वस्त्रान्न दे पाला उन्हें।''8

मैथिलीशरण गुप्त का नारियों के प्रति उदार भाव उनके काव्यों में भी दर्शित होता है। वे परिवार को केन्द्र में रखकर भारतीय समाज को देखना चाहते है। नारी माता–विमाता (कौशल्या–कैकेयी) प्रेमी बहन, स्वामिनी, दासी, विरांगना, परित्यक्ता, विरहिणी आदि अनेक रुपों में अपने खंडकाव्यों में चित्रित करते है। यहाँ तक की उन्होंने चैतन्य की 'विष्णुप्रिया' को और कार्ल–मार्क्स की पत्नी जेनी को भी अपना विषय बनाया।

'साकेत' की उर्मिला उनकी एक अमर सृष्टि है। वह अपने विरह में प्रकृति के हरे भरे रहने पर कहती है –

''रह चिर दिन तू हरी भरी
बढ़ सुख से बढ़ सृष्टि सुंदरी
सुख प्रियतम का मिले मुझे
फल जन – जीवन दान तुझे।''9

पत्नी उर्मिला को छोड़कर लक्ष्मण वनवास में अपने भाई राम के साथ गए थे। ऐसी स्त्रियां जिनके पति प्रवास पर गए होते है 'प्रोषित–पतिका' नायिका कहलाती है। उर्मिला अपनी समदुखी स्त्रियों को बुलाती हुई 'साकेत' के नवम् सर्ग में कहती है ––

''प्रोषितपतिकाएँ हो जितनी भी
सखि उन्हें निमन्त्रण दे आ
सम दुखिनी मिले तो दुख बंटे
जो प्रणय परस्सर ले आ।'' 10

सीता जो राजमहल में रही थी, जंगल में पति का अनुगमन करती है। उसे वही अपना स्वर्ग दिखाई देता है, झाड़–झाखंड़, कांटे भरे रास्ते और वन्य पशुओं के बीच सीता कहती है –

''औरों के हाथो यहां नहीं पलती हूँ
अपने पैरो पर खड़ी आप चलती हूँ
श्रम–वारि बिदु फल स्वास्थ्य शुचि फलती हूँ
अपने अंचल से व्यजन आप झलती हूँ
तनु–लता सफलता स्वादु आज ही आया
मेरी कुटिया में राजभवन मन भाया ।'' 11

यशोधरा तो और भी स्वाभिमानिनी है। वह तथागत बनकर आये हुए पति सिद्धार्थ को अपनी भिक्षा, इकलौते पुत्र का दान इन शब्दों में करती है–

''भिक्षुक बनकर आये थे, गोपा क्या देती स्वामी ?
था अनुरुप एक राहुल ही रहे सदा अनुगामी ।''12

गुप्तजी के सब आलोचको के निबंध में यह दो पंक्तियाँ अनेक बार उद्धृत की हुई मिलती है और इस पर यह भी आरोप लगाया गया है कि गुप्तजी नारी को अबला कहते है, जबकि बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय ने अपने प्रसिद्ध 'वंदे मातरम ' गीत में 'के बोले मां तुमि अबले ? (कौन कहता है हे मां – भारत माता– तुम अबला हो ?)

''अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी
आंचल में है दूध और आंखो में पानी।'' 13

यहाँ अधिकांश पाठक ' आंखो में पानी ' का अर्थ आंसू लेते है, जो ठीक नहीं है। ' आंखो में पानी' मुहावरे का हिन्दी में अर्थ है तेजस्विता। औरत की आंख में तेज होता है, यह भी उसका अर्थ है।

नारी बलिदान और समर्पण की प्रतिमूर्ति है, यह बार–बार गुप्तजी अपने काव्यो में बल देकर कहते है। वस्तुतः गुप्तजी के अनुसार नारी का अपना व्यक्तित्व है और वह उसके मानस की करुणा में ही अपना विकास पाता है। मां का दूध बच्चे के लिए होता है और आंसू सब पीड़ितों के लिए। ये दोनों ही देने की, उत्सर्ग करने की वस्तुएँ है। पुरुष अपने अभिमान में नारी को मोक्षमार्ग की बाधा मानता आया। ब्राह्मण समाज में सन्यासी होने का अधिकार सिर्फ पुरुषों के लिए ही सीमित था। बुद्ध

ने सबसे पहले नारी को भी भिक्षुणी बनने का अधिकार दिया। बाद में पुरुषों के साथ–साथ कंधे से कंधा मिलाकर नारी गांधीजी के सत्याग्रह संग्राम में कूद पड़ी। इन दोनों ऐतिहासिक घटनाओं का गुप्तजी के नारी चित्रण पर प्रभाव पड़ा है।

विश्व कुटुम्बवाद का यह व्यापक विचार गुप्तजी की कविता का मूल स्वर है। शान्ति का प्रचार सबसे अधिक नारी ही कर सकती है, वे अच्छी तरह से जानते थे। अतः वे अपनी कविताओ मे गृह सौख्य का ध्यान सर्वत्र रखते है। 14

गुप्तजी के नारी पात्र घोर से घोर संकट और विषम से विषम परिस्थितियों में भी धीरता, कर्मण्यता और कर्तव्य भावना का परित्याग नहीं करते। वे कर्तव्यनिष्ठ, त्यागशील और सहिष्णु नारी है। यशोधरा अपने श्वसुर शुद्धोधन से भी अधिक धैर्यवान, सहिष्णु है और वह स्वनिर्मित मर्यादा में तल्लीन रहती है और अंत में प्राणप्रिय के चरणों में अपना सर्वस्व राहुल उत्सर्ग कर अपनी जीवन साधना को पूर्ण करती है। विष्णुप्रिया का प्रेम तो आरंभ से ही त्याग निष्ठ है क्योंकि उसके पति तो पहले से ही संन्यासवृति के थे।

अपार मानसिक और शारीरिक कष्ट झेलते हुए भी गुप्तजी की नारी यशोधरा, उर्मिला, विष्णुप्रिया – अपने दायित्वों –पारिवारिक, सामाजिक आदि के प्रति सजग है और उन्हें निष्ठापूर्वक निभाती है। उर्मिला सासों की सेवा करती है, रसोई बनाती है, किसानों की दशा पूछती रहती है –

''पूछी थी सुकाल–दशा मैनें आज देवर से''15

और नगर की प्रोषित पतिकाओं की सुध–बुध लेती है। यशोधरा श्वसुर और पुत्र के प्रति अपने कर्तव्य को पूर्ण निष्ठा के साथ निभाती है और विष्णुप्रिया सास की सेवा ही नहीं करती, अपनी आजीविका स्वयं उपार्जित करती है तथा विषम परिस्थिति में भी वह पर्वोत्सव मनाती है। रोक निज दुःख हम मानें सुख सबका। हिम में जलती, तप में कंपती और वर्षा में सूखती हुई भी वह स्वावलंबी जीवन अपनाती है क्योंकि समाज के दया–दान पर जीना अनुचित है और आत्म–हत्या करना पाप।

गुप्तजी ने नारी के आहत नारीत्व से जागृत उसके स्वाभिमान, दर्प और मानिनी रुप को भी दिखाया है। गौतम यशोधरा को और गौर विष्णुप्रिया को सोता छोडकर चुपचाप चले गये। यशोधरा अपने आहत अभिमान की व्यंजना 'सखि वे मुझसे कहकर जाते' गीत में करती है तो गौर के सन्यासी होने का वृतान्त सुन विष्णुप्रिया आहत होकर कहती है –

''अबला के भय से भाग गये, वे उससे भी निर्बल निकले।
नारी निकले तो असती है, नर यति कहा कर चल निकले।।''16

यशोधरा गौतम के आगमन का समाचार सुनकर भी अपने कक्ष से निकल पति का स्वागत करने नहीं जाती, स्वयं गौतम उसके कक्ष में प्रवेश कर कहते है 'मरत्रानिनी मान तजो, लो, रही तुम्हारी आन' तथा शुद्धोधन भी उसके औदात्य को देख कहते है–

'गोपा बिना गौतम भी ग्राहय नहीं मुझको'। 17

यशोधरा के संबंध में बुद्धदेव ने तथा उर्मिला के संबंध में राम ने जो कुछ कहा है, उससे स्पष्ट है कि गुप्तजी नारी को कितना सम्मान देते थे। बुद्ध कहते है ''दीन न हो गोपे, सुनो, हीन

नहीं नारी कभी' और राम उर्मिला को सीता से भी अधिक धर्मपरायण कह कर उसका अभिनंदन करते है।''18

नारी पूजा के पीछे धार्मिक ओर आध्यात्मिक विश्वास भी निहित है। हमारे यहां हिन्दू विश्वासों में पार्वती के साथ शिव, लक्ष्मी के साथ विष्णु, सीता के साथ राम, राधा के साथ कृष्ण का स्मरण करने का विधान है। यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता ' कहा गया। नारी यदि केवल दासी या भोग की वस्तु बनाई गई तो समाज विकृत हो जाता है। मुक्ति और मुक्ति के पीछे एक संतुलन रहना चाहिए और वह 'भक्ति' है जो स्वयं नारी है।

भोग में भी योग का संतुलन बनाए रखने वाली महिमामयी भारतीय नारी गुप्तजी की आदर्श देवी है। नारी का आदर्श गुप्तजी की दृष्टि में 'साकेत' की सीता है।–

''उन सीता की निज मूर्तिमयी माया से,
प्रणय प्राण को और कान्त काया को।
यों देख रहे थे राम अटल अनुरागी,
योगी के आगे अलख ज्योति ज्यों जागी।''19

सारांश यह है कि गुप्तजी की दृष्टि में नारी अपने सतीत्व, एकनिष्ठ प्रेम, उत्सर्ग, त्याग, सहिष्णुता, धैर्य, उदारता और स्वाभिमान की रक्षा के प्रति सजगता आदि गुणों के कारण महान है, पुरुष से अधिक गौरवशालिनी है।

संदर्भ सूचि :

1. द्वापर – मैथिलीशरण गुप्त पृष्ठ 17
2. यशोधरा – मैथिलीशरण गुप्त पृष्ठ 20
3. वही – मैथिलीशरण गुप्त पृष्ठ 40
4. मैथिलीशरण गुप्त काव्य संदर्भ कोश– डॉ.नगेन्द्र पृष्ठ 16
5. भारत – भारती मैथिलीशरण गुप्त पृष्ठ 21
6. वही – पृष्ठ 24
7. वही – पृष्ठ 69
8. वही – पृष्ठ 148
9. साकेत–नवम् सर्ग मैथिलीशरण गुप्त – पृष्ठ 190
10. वही – नवम् सर्ग – पृष्ठ 173
11. वही – अष्टम् सर्ग – पृष्ठ 138
12. यशोधरा– मैथिलीशरण गुप्त पृष्ठ 112
13. वही – पृष्ठ 40
14. हिंदी साहित्य के निर्माता मैथिलीशरण गुप्त – प्रभाकर माचवे पृष्ठ 83
15. साकेत नवम् सर्ग– मैथिलीशरण गुप्त पृष्ठ 195
16. विष्णुप्रिया– मैथिलीशरण गुप्त पृष्ठ 49

17. यशोधरा– मैथिलीशरण गुप्त पृष्ठ 95

18. मैथिलीशरण गुप्त काव्य संदर्भ कोश– डॉ नगेन्द्र पृष्ठ 16

19. साकेत अष्टम् सर्ग– मैथिलीशरण गुप्त पृष्ठ 136